

ASIA ARCHIVES

343

STANLEY

STANLEY

213 - STANLEY

STANLEY

213 - STANLEY

STANLEY

वक्र ९
१ न पञ्चापकुशमात्र

ॐ नमः श्रीचक्रसम्बन्धाय ॥ गद्यचक्रक्रियाविधिमाह ॥ प्रथमतः न आचार्यस्य गृहे ग
त्वागुत्तमः श्रवणाविधिः ॥ आरिभक्तमूलपालः ॥ आचार्यस्य गुणमधुलवलिदाने च यश्च गव्य
त्रिसमाधिः क्लृप्तमधिवसनः दवकाधिवसनः ॥ तद्वृद्धिगुणमधुलकृत्वा ॥ शिष्यतावना ॥
स्वकात्रवीजाधियुक्तममायसिद्धिः ॥ कलसैरुतकर्मवर्जिने विलास्य ॥ नीलीकादिगत्तम
धुलकात्रपत्तः ॥ शिष्यात्पीगुनधनतः ॥ मधुलंदापयत्तः सर्वसहितमयन्दत्वा ॥ अर्थमेव
जगत्तवनः श्रीवैजाचार्यसकर्मवर्जिः ॥ गद्यचक्रनिमक्तः ॥ यथादायै प्रतिच्छेत्वा ॥ पी. ली. र्प.
मुक्तिः ॥ नमस्तु गच्छाकिन्त्यः ॥ पविर्शतु मम गृहः ॥ धनागुच्छपूजार्थं न हस्यमधुलकृत् नमस्तु

१५
१

ज्ञानरूपाय नमस्तु त्वत्तात्रकः अयमस्य पूजार्थं निमक्तुं कर्तव्यम् ॥ कृताङ्गलिनायाच
यत्तः ॥ अथ ध्यायामि कृतात्रकः त्वमस्माकमहाविद्याः सर्वसत्त्वार्थसागरादङ्कितः बुद्ध
त्वेनेति श्रवणाय ॥ यथा कस्य गद्यचक्रमधुलं पवकूर्तवात्रयिष्मिन् यथा तिर्यक्कर्तव्यं
तत्कनक्षीयमिति ॥ अथ कृत्वा ॥ कृत्वा लिपयत्तः ॥ नमस्तु ज्ञानरूपाय नमस्तु त्वत्ता
त्रका अयमगृहपूजार्थं निमक्तुं कर्तव्यम् ॥ ॥ तद्वृत्तकृतसाधकनमधुलकृ
त्वा मुक्तिशतारुत्तमाय नमः ॥ आशिर्वारः मधुलविहङ्गनः शिष्यातिषकः चर्ककृतसम
याचक्रविधिना कृत्वा ॥ प्रतिनिवर्तयति ॥ कृतिगुणः अथ ध्यायामि ॥ ॥ तदन्तर्कम्

व.पू.
२

दिनप्रथमतर्पणं गन्धपुष्पवर्कसमधुलसुखानामुत्तमं गीतं गुणमधुलमकीकृतं गन्धसमाधिः कृतं
नागघसगुणपूजा दवपूजा ॥ तृमिः अधर्नकुर्यात् ॥ गतं सगन्धतीर्थवृजलनसद्यमधुलसुख
नरुमिमहिर्पांरुमर्लकृत्वा ॥ ३६ ॥ खमितिप० न्नाकाडीकुर्यात् ॥ ॥ गीतवक्रमयत्तमि ॥
तावना ॥ हेलैहं ०० ह्यननवक्रमयत्तमि ॥ विवितावा ॥ पूनस्सवक्रमस्तनरुमर्दत्वाधितिष्ठत् ॥ ३७ ॥
दनीवकीतववक्रमवन्धहं ॥ ३८ ॥ नरवक्रमवन्धहं ॥ ३९ ॥ आ० हं ॥ अधयरहं ॥ धूप ॥ समन्वाहनकुमीवक्र
अ० जघादिकुसंस्मिता ॥ ४० ॥ हारुममकावकीवर्कयिष्णामिसद्यमधुली ॥ आयातसर्ववक्रा
या० सिद्धिमनाप्रदास्यथ ॥ अयमसफलकृन्मसफलकीवित्तवम ॥ समर्थसर्ववृक्षानीरुवि

[illegible]

च. ५
४

संज्ञपन॥ पृथ्वीत्याशा॥ ॥ मन्त्रः ॐ ३ ॥ इति मन्त्राधितिष्ठत॥ बलि॥ वनसमयाचारकला
नरुसालिखिताष्टदलकमलोपनि॥ स्वस्वमुदीनका॥ स्त्रीगपृथ्वीरत्नावयत॥ यानुयाधिताव
ज्ज्वातस्त्रिपापृषपातान्नपरवीनूपम्वा॥ पृथ्वीगुञ्जीसम्बन्धुपविर्चिन्त्य॥ तस्मात्कस्मिन्वाध
वीरुसपृथ्वीनतीक्ष्णानद्वतीषव॥ ॥ स्था॥ आकर्षमादिनिलाङ्गननका॥ ॥ गीतहाज
हनहा॥ ततामद्राहावना॥ चकी॥ ॥ कुलकलित्रचकमखलाहस्म॥ यथाक्रममहासा
मिताहातत्वसम्बन्धनाचना॥ मायसिद्धि॥ श्रीरुक्मन्पातमदिति विचिन्त्य॥ तद्धानसत्त्व
थागतान्यवस्थ॥ अकात्यादिपत्रितश्चकारिमडा॥ अकात्यादिस्वतावीपवतिमिधिमन्त्री॥

गुन
४

निलाङ्गनविधिवस्यारिसंप्रसू॥ मृक्षीगुञ्जिनसिर्भिधनमालारुय॥ पृथ्वीगुहस्मलपना
कानधत॥ ॐ श्रीवज्रहृन्त्रकहृहृदृस्वाहा॥ ॥ गीतधनधन॥ मद्राहवयत॥ व्याघ्रचर्म
॥ ॐ सर्ववैद्यगकिनीयवज्रवर्धनीय॥ वज्रवेनाचनीयहृहृदृस्वाहा॥ त्रिजपंचकी॥ ॐ धनरधा
ननरमर्दयवज्रधकहृहृदृ॥ ॐ व॥ ॥ वज्रवेनाचनीयहृहृदृस्वाहा॥ गृह्णरुमनावीन॥ चकी॥
अकात्यात्मकी॥ कुमुलो॥ ॐ वज्रधर्म॥ समर्त्वरुनरभालोलिकहृहृदृस्वाहा॥ डाही॥ हृहृ
हृहृदृ॥ गृह्णरुमनावीनकुमुलामिताहात्मकी॥ श्रीवज्रसत्त्वमुदयवहिनध्यात्मसीस्ति
त॥ काहि॥ ॐ वज्रसत्त्वतमाविधमयम्बनलधकहृहृदृ॥ ॐ सर्ववैद्यगकिनीयवज्रवर्धनी

च. प्र
३

नीय. वक्रवेगावनीयहं हृदस्वाहा॥ गुरुदत्तमनावीन. कश्चिन्नत्तसम्भवात्मकं॥ श्रीवक्रसत्त्वम्
इयवहिनध्यात्मसीस्ति. ती. नचको॥ ओं शिवतपनमश्वात्तनुहिकिन्नजिकहं हृदस्वाहा॥
गुरु८नमस्त्री८स्वाहाहं वाघटहं हं हाहृदहं॥ गुरुदत्तमनावीनचकीश्वतात्मकं॥ श्री
वक्रसत्त्वमुद्रयवहिनध्यात्मसीस्ति. ती॥ ननुमखला॥ ओं हं प्रहासकहं ओं वं हो या
होमहं॥ हं हं हृदहृदस्वाहा॥ गुरुदत्तमनावीनममायसिद्धात्ममखलाश्रीवक्रसत्त्व
समुद्रयवहिनध्यात्मसीस्ति. ती॥ ॥ ओं श्रीवक्रहं नृकहं हं हृदस्वाहा॥ मनुधनोपन
वक्रसत्त्वमुद्रमाहा॥ पन८पाव॥ ओं कनरप्रचलुहं हं हृद॥ ॥ खद्वा८मनश्च॥ ओं नमा

गुन
३

लगवतवीनवीनश्वनायसादि॥ गुरुदत्तमनावीनखद्वागुमनपावकी. श्रीवक्रसत्त्वम्
मुद्रयवहिनध्यात्मसीस्ति. ती॥ वक्रमुखगीवावमुवर्षपताकीनसत्॥ प्रतीपमाहास्व
शिनसिद्धतास्वमनुधनश्चका हिमन्निगन. निरुनिरुजिनसमाहाहृयत्॥ तनुच
रुक्कस्यप्रताऊर्नग्रहयत्॥ ॥ ॥ तदन्पक्षपतवलीदीयत्॥ वहिर्गच्छते॥ ॥
तनुयमनिकावलीदत्ता. नचनदिवाहयत्॥ ॥ ॐ नमः श्रीपसन्तस्वनाय॥ ॐ नमः
श्रीवक्रसम्भवाय॥ नुस्पवक्राद्यु

च.पू
३

विततपद्मपुनः सवेः प्रकृतं
नलवायवाधनकतिः कीन्तस्यवि
नरूपस्वनस्य॥ ॐ नमः श्रीपद्मनृपस्वनाय॥ ॐ नमः श्रीचक्रसम्भवाय॥ नागमाता॥ नमः
स्मान्॥ नागगन्धर्वा॥ नागचपति॥ गीत॥ विस्वसनात्मा॥ पाग॥ ॥ स्मक॥ ॥ किञ्चित्

अपिच॥ यस्याच्चेहृत्काय
मधुपाननेपटतया॥ अतिरिन्द्रियाः यामिन्द्रि
स्मान्॥ ॐ प्रकृतमनिति॥ सपातुहृगवान् श्रीपद्म
॥ ॐ नमः श्रीचक्रसम्भवाय॥ नागमाता॥ नमः
स्मान्॥ नागगन्धर्वा॥ नागचपति॥ गीत॥ विस्वसनात्मा॥ पाग॥ ॥ स्मक॥ ॥ किञ्चित्

गन्
३

त्यपत्रिगुहाय रुद्रवशसायवर्द्धयुक्तस्त्यायसरुसाभिरचित्रतयापानीप्रपातायसो॥ ॐ
हंसार्थविप्रहृदयः चित्तविवर्तनताः विस्वव्यामदयात्मकः वनगन्धर्वन्दमदासर्वदा
॥ २॥ गीतहृन्सित॥ नागमप॥ तनुज्यपादज्ज्वयत॥ ॥ स्मक॥ नमस्तुहं नमामि
हं नमानमः ॥ स्मक॥ किञ्चित्
राचयत॥ ततश्छिष्यतः सः खड्ग
॥ ॥ ॐ सनरहित्रिकनरपचरुनरुनरुहृत्किरुहं ॥ अकानवम्भवज्ञधनरधिनि
धनरतनरमनरवनरनस्मिसरुमुपतिमदितज्ञानीनः कलतपहृगवन्सामादित्ययम

च. ५
१

वत्सकवनवृक्षद्वयनतमविद्वगस्तत्पचित्तनस्तथपञ्चमचक्रदर्शनार्थमर्थप्रति
च्छ्वारा॥ पारपूजादकनादिर्ह्यस्वपूजादज्ञपतिर्दयात्तुगुनवः॥ ॥ ततः सर्वे नृत्पैक
यन्ते॥ गीतत्रिद्वयनकलित॥ ॥ स्लोक॥ ॥ नत्वा सर्वतथागमीशुसगस्तथापनार्थगुनाः
ग्रीवशासननामरूषीततनाः सः सानदाखायुर्जम्बूवनवृक्षतारमञ्जरीसस्ता
पूनर्त्तसर्वे॥ गीतप्रमहिसमुल

॥ स्लोक॥ यावन्तसर्वसत्वाः

थनमाककायः सकलैः आयस्फुटके॥ थनीलिः मल्लक
नृत्य॥ माक॥ नागहेनवि॥ तानत्रक॥ अकानमीजातः पि

शौचन्दगहनादिपत्रिवानाधमा कर्षयः शौचन्दागहनायस्वारा॥ धूपः नसाकः गुग
नाः चकवीमधि॥ ॥ स्लोक॥ पूर्ववृक्षायनीपीतवर्म्मेतः कर्मीदन्धनाशुलावदमाता
विसानाक्रिनमामिहंसवाहिनी॥ ॥ चचा॥ यवर्जित

च.पू
८

उरुनन्दायनी॥ लावना॥ ओं गङ्गादिगणपतिवानास्तमाकर्षय गङ्गायाय स्वाहा॥ धूप. न
साक. गुगुहि. चपनामधि॥ ॥ ॥ ॥ इलाक॥ उरुनन्दायनी॥ इवतवर्कला. विभूतपा
वृध्नात्रिणी. विनयाचात्रवदना. न
वन्स

पश्चिमरुद्रायनी लावना॥ ओं कालीकलाय. सगणपतिवानास्तमाकर्षय ओं कालाकला
य स्वाहा॥ धूप. कल्पनरुगुण. न इ उम॥ ॥ ॥ इलाक॥ पश्चिमरुद्रायनी की की मागीचवक्ररु

गन्
८

लाद्युनस्वनी. सरुमुवदना सोम्यनमामि रुक्मिवाहिनी॥ ३ ॥ चर्चा॥ टवर्गजात

रुक्मिवाहाही लावना॥ ओं कर्त्रकहेनवाय. सगणपतिवानास्तमाकर्षय. ओं कर्त्रकहेनवाय
स्वाहा॥ धूप. नकि. गुगुपञ्चपता॥ ॥ ॥ इलाक॥ ओं रुक्मिवाहाहीनक
वर्कला मिमीकृशधनाशुला. यन
वर्गजात

अग्निकोनी लावना॥ ओं जूदूहासाय सगणपतिवानास्तमाकर्षय॥ ओं जू

च. ५
२

इह साय स्वाहा धूप वान नुग खरू पाय रुमधि ॥ ॥ इलाक ॥ अरुन को मात्री न कवर्त्त
ताहा किह स्ताह यान काठिन गा जो उवद नौगी चन मा मिशिषि वाहिनी ॥ ५ ॥ चची ॥ कव
र्ग

नेम सखी वीरूवी ॥ लावना ॥ ओं लक्ष्मी नन रुताय अग धप निवाना सभा
कर्षया ॥ ओं लक्ष्मी वन रुताय स्वाहा ॥ धूप कडाहा रुगुमधि याना प्रसा ॥ ॥ इलाक ॥ नेम स
विष्णु वीरूवी मवर्त्त च क रुताम ना रुतागुन गा सोम्य वदना नमा मिग न उवा सिनी ॥ ७ ॥
॥ चची ॥ पवर्ग

गुन
२

वायु चाम्पु लावना ॥ धानो धकाना य सग धप निवा
ना सी आकर्षयतु ॥ उं धाना न्धकाना य स्वाहा ॥ धूप सिद्धाय नुगुति सिन्धु मा रुनि उदमधि
॥ ॥ इलाक ॥ वायु चाम्पु न कवर्त्तगी कर्त्तिक पान धा निशी कषा श्री कनरूपी चन मा मि
पुन वाहिनी ॥ ६ ॥ चची ॥ अवर्ग

जात

वही ज्ञान महा लक्ष्मी लावना ॥
उं किलि किलि नाय सग धप निवाना सी आकर्षयतु ॥ उं किलि किलाय स्वाहा ॥ धूप कम्पु
नि नुगुति सिन्धु वरुणि पुनिमधि ॥ ॥ इलाक ॥ वही ज्ञान महा लक्ष्मी च उवता हा क पान खडी

च.पू.
१०

गङ्गात्रिती. त्रिनद्या. सोम्यवरना. नमामिसिंहवाहिनी ॥ २ ॥ मध्य. चर्चा ॥ तेनव कालिपाद

लोककन्या ॥ अश्वत्थ
लचक्रद्वयतया. लुकनिकाति
रास्यद्विधा. अस्माकाशसमापियमुसदयः तस्मै नमः सर्वदा ॥ ॥ तदनूवृद्धवल
वंश ॥ वृद्धवलमाका ॥ वृद्धवलाकि ॥ लोक ॥ किमाकाकनूतना
मूलाचार्याकि ॥ लोक ॥ वृद्धवलमहा

गुन
१०

काध. दर्शयन्तुदिरादश. जायान्तासर्वमानाही. छपजी धीत्वयाकनू ॥ ॥ तनुवृद्धवल
नृत्प ॥ नागकामाद ॥ तानखवृद्धगभनागीत ॥ त्रियीत्रिजनाथ. क्रिया ॥ नमसचिपतिर
१ पूर्व ॥ लोक ॥ उंसमनिरहंरुद्र ॥ ॥ चर्चा अग्न ॥ अ

पृथ्वीननाका

शादकि ॥ चर्चा ॥ अम्वरुवनजन
॥ लोक ॥ उंसमनिरहंरुद्र ॥ ३ ॥ नमसचर्चा.
४ पश्चिमचर्चा ॥ उर
॥ लोक ॥ गङ्गापयरहंरुद्र ॥ ५ ॥ वायु

च.प
१९

या॥ चर्चा॥ समीन

उक्तचर्चा॥ ऊरु

उं जानय रूँरू ॥ १ ॥ ॐ जानचर्चा॥ नोडग

॥ मध्यच

र्चा॥ अर्धार्क

३
रत्ना का॥

वृद्धवल (ल्लोका) जा

कनाम्पहृत्वाहाफे रईयनिदि (आरंभ) रंजकारुदजरिज कीलयनिसदनाथरू ॥ ॥

गुन
११

वृद्धवलमाकनच्छया ॥ ॥ थनमनाचार्यनृत् ॥ माक ॥ नागहंनवी ॥ तानमप ॥ ॐ खवजध

पयघातय ॥ ॥ तनुपूर्वकीलमाकारन ॥ ॐ घयघारय र सर्वदृष्टानरूँरू कीलय र सर्व
पापानरूँरू ॥ ॐ वजकीलयवजधन आरूपयति सर्वविद्युविनायकानीकायवाक्चिरू

व.पू
१२

वज्रान्कीलयहं फूरु वज्रमुज्ज्वलवज्रकीलयमाकारयहं फूरु ॥ ॐ निनिविद्युम्हावयतु ॥ पूर्व
काकासीरुगवतिमाकर्षयतु ॥ लावना ॥ उं काकास्य घ घ घातय २ सर्वदृष्टं स्वान्तेपनिवाना
नकीलयहं फूरु ॥ मनु ॥ उं काकास्य हं २ फूरु ॥ अथवा उं आ ४ यमानकीलयहं फूरु ॥ पं. ला. घं.
तो ॥ ॥ इलक ॥ पूर्वसूनशमर्थनी ॥ हीनाऊनयतिपलाघाननृपापचक्षुशी. काकनुक्षी
नमामिहं ॥ १ ॥ उरुन ॥ चर्चा ॥ श्रीवज्रसत्त्वज्ञाना ॥ उरुनदि

ययशा

तयश ॥ ॥ उरुनकीलनमाकारन ॥ ॥ उरुनउलकास्यारुगवतीमाकर्षयतु ॥ लावना ॥

ग.पू
१२

उं उलकास्य घ घ घातय २ सर्वदृष्टं यथाधिपसपनिवानान्कीलयहं फूरु ॥ मनु ॥ उं उलकास्य हं
हं फूरु ॥ अथवा उं आ ४ हं पहीतकीलयहं फूरु ॥ पं. ला. घं. मनु ॥ ॥ इलक ॥ उरुनयकनाय
थं. मर्थनी ॥ मवर्हिनी ॥ मरुही ॥ हीमनृपा ३ उलकासीनमामिहं ॥ २ ॥ पश्चिम ॥ च
र्चा ॥ पश्चिमदि

यय. घातय २ ॥

॥ पश्चिमकीलनमाकारन ॥

॥ पश्चिमइक्षाना

सीरुगवतीमाकर्षयतु ॥ लावना ॥ इक्षानास्य घ घ घातय २ सर्वदृष्टं सपनिवानान्कीलयहं फूरु
॥ मनु ॥ उं इक्षानास्य हं हं फूरु ॥ अथवा उं आ ४ हं यमानकीलयहं फूरु ॥ पं. ला. घं. मनु ॥ ॥

च.पू.
१३

॥ इत्युक्तं ॥ पश्चिमं ॥ नक्तं च स्वर्गं ॥ नागधियं पतिमर्दनीं ॥ यानादृशसविकरीं ॥ स्वानाननीनमाभिर्दृष्टं ॥ ३॥
दक्षिणं ॥ चर्चा ॥ दक्षि

क्रि. स. क. न. म. र. ग. व. ती. मा. क. र्घ. ॥
 स. प. नि. वा. न. न. की. ली. य. हूं. फू. र. ॥ म.
 की. ल. य. हूं. फू. र. ॥ पं. ला. घं. म्मु. ता. ॥
 र्घ. न. ना. दि. श्च. न. मा. मि. स. क. न. न. ती.

यद्यप्यारय ॥ ॥ दक्षिणकीलनमाकाटन ॥ ॥ द
त ॥ तावना ॥ उंसकनास्ययय. घातय २ सर्वदृश्यमा
नु ॥ उंसकनास्यरुंरुंरुं ॥ अथवा. उंआरुं विद्यात
मक ॥ दक्षिणरुंमवर्त्तगी. कृतान्तदण्यरुंनिही. घातय
॥ अरुंन ॥ चचा ॥ दहनवन

१३

॥ अग्नि कीलनमाकारन ॥ ॥ अग्नि यमदाती तगवती माकर्षयत ॥ लावना ॥ उं क्रमरा
तीय घ२ घातय२ सर्व इष्टाग्नी सयत्रिवा नान् कीलय हूँ फूट ॥ मन्त्र ॥ उं यमदाती य हूँ हूँ फूट ॥ अ
थवा ॥ उं आ४ हूँ अचल कीलय हूँ ॥ फूट ॥ पी. ला. घं. म्. त ॥ ॥ रत्नाक ॥ अग्निमानाय
हृदयी कृष्ण पीताल विग्रहादह ॥ नाधिपतिरुन्नीय यमदाती नमासि हूँ ॥ ॥ नेमस्य ॥
चर्वा ॥ दिति रुवनका हृदयी यम इति न पीता नृह तन् कारन पार लक्ष्मी वन रुता अनन नाक
साधिपति गह कीलयन्ति ॥ घघ घातय २ ॥ ॥ नेमस्य कीलनमाकारन ॥ ॥ नेमस्य

यश्चात्तयः

च. प्र.
१४

इतीरुगवतीमाकर्षयत॥ लावना॥ उं यमइति य. घ. घात यर सर्व इष्ट ने सत्यान्सपनिवानान्की
लयरुं फूट॥ मन्तु॥ उं यमइती यरुं फूट॥ अथवा॥ उं आ४ रुं टर्कि नाऊ की लय रुं फूट॥ प. ला. घ.
मु. त॥ ॥ रत्नाक॥ ने सत्यपीत॥ नका लाक व्या साधिपतिमई नी घा ना ह सो सवर नी
यमइती नमा मिहू॥ ३ ॥ वायूय॥ ॥ चर्चा॥ वायूय का ॥

य. घ. घात॥

यर॥ ॥ वायूय की लनमा कारन॥ ॥ वायूय यमइतीरुगवतीमाकर्षयत॥ लावना॥ उं
यमइती य. घ. घात यर सर्व इष्ट वायून्सपनिवानान्की लय रुं फूट॥ मन्तु॥ उं यमइती यरुं फूट॥

प्र.
१४

फूट॥ अथवा॥ उं आ४ नील रघु की लय रुं फूट॥ प. ला. घ. मु. त॥ ॥ रत्नाक॥ वायूय नका
सो माङ्गी स्वसनाधिपमई नी॥ माता निरुय दी गोडी. यमइती नमा मिहू॥ १ ॥ ठी झन॥ च
र्चा॥ ॥ ॥

॥ ठी झन यममर्थ नीरुगवति ॥ ॥ य. घाट यर॥ ॥ ठी झन की लनमा कारन॥
माकर्षयत॥ लावना॥ उं यममर्थ नी य. घ. घात
यर सर्व इष्ट झनान्सपनिवानान्की लय रुं फूट॥ मन्तु॥ उं यममर्थ नी यरुं फूट॥ अथ
वा॥ उं आ४ महावल की लय रुं फूट॥ प. ला. घ. मु. त॥ ॥ रत्नाक॥ ठी झन सो मक

व. प्र.
१५

स्त्रीगी. ततः शरद्वर्षा त्रिशी. माना त्रीर्ध्वसनी नदी यममर्थनौ नमामि ई. ॥ ८ ॥ उर्ध्व. चर्चा. उर्ध्व.
ष

यय. घातयश्म. ॥ उर्ध्वकीलनमाकारन. ॥ उर्ध्वदुर्ध्वचक्रवर्ति
नैमहाकारनाजमाकर्षयत्. ॥ १॥ वना. ॥ उर्ध्वदुर्ध्वचक्रवर्तिनैमहाकारनाजयय. घा
तयश्मसर्वदृष्टवम्मादिस्सपत्निवा. ॥ नान्कीलयहृद. ॥ मन्त्र. ॥ उर्ध्वदुर्ध्वचक्रवर्तिनहृद
द. ॥ ॥ इल्लक. ॥ वृक्षद्वर्कादया इष्टान्गुरुमयादिषचनान्. ॥ माना त्रीर्ध्वसनी नदी यममर्थनौ नमामि ई. ॥ ८ ॥ उर्ध्व.
षचक्रवर्तिनमा. ॥ २॥ अर्ध. ॥ चर्चा. ॥ सैतनाजकाराश्रिती नीलमन्त्रि. पातानवासिनि. मान

ग. न.
१५

यय. घातयश्म. ॥ अर्धकील
नमाकारन. ॥ अर्धसूक्तनाजैमहाकारनाजमाकर्षयत्. ॥ तवना. ॥ उर्ध्वसूक्तनाजयय. घा
तयश्मसर्वदृष्टवम्मादिस्सपत्निवा. ॥ नान्कीलयहृद. ॥ मन्त्र. ॥ उर्ध्वसूक्तनाजायहृद
॥ ॥ इल्लक. ॥ एधिनागसनाद. ॥ कान्. ॥ रुचनीमानमर्दिनी. यथच्छसिद्धिदानार्त्त. स.
सूक्तनाजैमाम्यई. ॥ १० ॥ दहृदिहृदाहृकात्रनादन. पक्षमामिदक्षकारान् २ आसापत्निपूत्रय
ज्ञानपत्तिनसर्वविद्युनिनवान्न. ॥ इल्लकनृत्. ॥ यश्मसत्त्वार्थयन्त्र. ॥ एकतितविक्रताशप
हृकात्रनाद. स्मयविद्यापयावाघटितयनयसायाषसानन्दमूर्ति. ॥ सीसानाकानकानाश्रुवि

च.पू
१६

इन्द्रनादाद्दुष्टप्रसक्तदिक्कैकाधवकीधतकनकमलीकाधनाईनमाभि॥ ॥ मन्त्रनृत्य॥
नागमधूमता॥ तान्द्रुमाना॥ प्रमृदितादिदृष्टा

78

२३३॥ नृत्यतीक्ष्णाय

॥ तौ इव कीलकान् निरूपयन् वस्तुपयता ॥ कृतिविद्युकी
लनविधिः ॥ ॥ यनमूलाचार्ययाह उक्तः कलशः सूर्यः मत्तः आदिः अन्तर्बोद्धिः अपनाया
यः इतस्तस्मात्कर्मपञ्चालकर्थः ॥ ॥ चतुर्थापनायायः मद्युपातालैखवलि समाधिवलिः ॥

च. पू.
१०

तनशपात्ररुद्रादिन. मूलाचार्य. चक्रवर्ती. उपाध्यायदिगचार्य. दिगमात्रापर्यन्तस्त्वापनाया
य. धूपदह. कनकासकस्तया॥ उपाध्यायकनहंशवलिपात्ररुद्रादिनस्त्वापनायाय॥ ॥
थनसकस्तनगुनमधुलगा. गीतमधुमन्त्रा. सिन्धुतया॥ पञ्चजालि. आदिसमयपूजा. देवस्त
पञ्चस्यपूजा. अ. कनसाध॥ ना॥ उपाध्याय. वलिपात्ररुद्रास्त्वापनायानागुवलिविय.
तायअकनकापकाकनका॥ पयासीवलिसस्तला. मन्त्रा॥ उं वज्रवानाहिसर्वइष्टा. क
कनकरुद्रहंफुट॥ स्वाहा॥ धाता॥ आदिचक्र. वलिचक्रकनसतयक॥ आदिसमयलहिय. म
धुलधिला. कनका. कलिनामस्तनामि॥ ग. आ. आ॥ नमस्तु चक्रनाथाय. नमस्तु स्नानदायन।

गुन
१०

नमस्तु शुद्धपाय. नमस्तु वतानका. नमस्तु नमानम. तस्मा ईत्वीनमुष्णामि. गद्यचक्रायनम
स्तुत॥ लंखवलि. काय॥ विसमाधि॥ गीतअनिला॥ केशसर्गमक. कर्मपूजा॥ गीतनकावर्त
रुद्रपूजागीतविचक्र॥ ॥ थनचक्रवर्ती. निस्प. दिगचार्यसकनस्तस्नानतयक॥ तावना॥
उं श्रीवज्ररुद्रकहंफुट॥ उं श्रीरु॥ रुद्रहंफुट॥ मूल॥ उं उं उं सर्ववृद्धाकिनीयवज्रवर्तनी
यवज्रवेनाचनीयहं उं फुट॥ स्वाहा॥ माता॥ उं जाकिनियहं रुद्र॥ उं लामहं रुद्र॥ उं खलुनाह
हं रुद्र॥ उं नपिनियहं रुद्र॥ उं वाधिविलामतता. रुद्रहं रुद्र॥ ४॥ चिकुचक्रस्तना॥ उं क
नरपचक्रहं रुद्र॥ उं कनकचक्रहं रुद्र॥ उं वन्धरपताकेनियहं रुद्र॥ उं तासयम

च. ५
१८

मानाशयहं हं फट्॥ विरिआस॥ उं क्रातय २ वीनमति हं हं फट्॥ उं हं २ ख वनिय हं हं फट्॥ उं हं २ लीक
धनिय हं हं फट्॥ उं फ २ रुम च्छय हं हं फट्॥ ॥ वाकचक्र॥ उं फट् २ वनावनिय हं हं फट्॥ उं हं २
महातेनवीय हं हं फट्॥ उं पच २ वायवग हं हं फट्॥ उं हं २ वसनधितान्तमालावलीविनसनात
क्रिय हं हं फट्॥ विरिआस॥ उं ग २ ॥ सफपाताननुक्रमसर्पवातकृय ॥ आमारवी हं हं फट्॥
उं आकर २ सतड हं हं फट्॥ उं की २ ॥ हयकार हं हं फट्॥ उं हं २ खगनन हं हं फट्॥ ॥ काय
चक्र॥ उं क्रा २ चक्रवग हं हं फट्॥ उं हं २ खगुना हं हं फट्॥ उं हं २ सोधिनिय हं हं फट्॥ उं हं २ चक्र
वन्मिनिय हं हं फट्॥ विरिआस॥ उं किनि २ सवीन हं हं फट्॥ उं सिनि २ महावन हं हं फट्॥ उं हिनि २

ग. ५
१८

चक्रवलिनीय हं हं फट्॥ उं धिनी २ महावन हं हं फट्॥ ॥ आनष॥ उं काकार हं हं फट्॥ उं डल
कार हं हं फट्॥ उं स्ताना हं हं फट्॥ उं अकना हं हं फट्॥ विरिआस॥ उं यमरातिय हं हं फट्॥ उं
यमदतिय हं हं फट्॥ उं यमदधिय हं हं फट्॥ उं यममर्थनिय हं हं फट्॥ ॥ अमआनष॥ उं च २ सु
ग्रहाय हं हं फट्॥ उं गहालाय हं हं फट्॥ ॥ उं कालाकलाय हं हं फट्॥ उं कनकतेनवाय हं हं फट्॥
॥ विरिआस॥ उं अतुलहासाय हं हं फट्॥ ॥ उं लक्ष्मीवलरुतासनाय हं हं फट्॥ उं धानाधकाताय हं
हं फट्॥ उं किलिरनानवाय हं हं फट्॥ ॥ उं स्वतावसद्धासर्वधर्मा स्वतावगुहा हं हं फट्॥ उं गुन्यताहान
वज्रस्वतावात्मका हं हं फट्॥ ॥ इति पृथ पातन॥ ॥ धनमूलाचार्य धूपदहजास्य रक्षापनिनृत्य

च.पू
१९

नागहेनवी॥ तात्रिहना॥ नमहं अकात्र

॥ स्मक॥ नृत्तापादावि

धनइनयागलप्यर्कः पूर्वनिर्सी चूपचूपयर्कनृत्ता॥ हा
नैगगुपनप्यर्कचूपानहानृत्तामान॥ पूर्वा॥ नागमललि॥ तात्रमाथ॥ सन्तानिन ऊनपत्रमप

गत्र
१९

पूर्व ॥ त्वैवजसत्त्वतुवनह्वन
सत्त्वधनुः कामाहिमीत्रतिमनारुमरुथका मेऽ कामाहिमा ऊनकसत्त्वमरायव (सो) ऊदि
चूम्यजीवनुममनाथ॥ दक्षि ॥ नउ

धिवत्रमार्थहिनानृदसि। नागान
पश्चिम॥ अश्मत्र
दक्षि ॥ त्वैवजकायवरुसत्त्वपिणागचकी. वुझार्थवा
गगसमकासमकासयस्त्व. यदि च सजीवनुममनाथ॥

पश्चि ॥ त्वैवजवाचसकलस्यहिनानृकम्पीलाकार्थकार्यकनरसगतैपक

च. पू.
२०

ली॥ कामाहिमी सनत चर्य सम नरुद. यदि च सुजीवे तु मकनाथ॥ उरुन ॥ जिम पठि वि
नू सी हावरा विनि हावयि मन हाव २ सन्निने ऊन पत्र मय हू ना कयि पृथ न पावू ॥ उरु ॥
लेव ऊ काम सम पाय स हाहि ता ॥ थं सी वृद्ध वग किल क सम तानू कयी ॥ कामाहिमी गुश
निध वरुन त्रुष यदी च सु ॥ जिव तु मकनाथ॥ ॥ जिम ऊल मा म्य च द्य सहि
ना सा स्व चरति नि साम सुल चक्रा नन य सी हाव स्व च ॥ ॥ थन मूला चार्य नृ ॥
नाग कनदि ॥ तात्र ॥ विरु हा चापयि

क सो गतं निर्ये धर्म जनी न स ॥ ॥ रज्ज्मा क ॥ यस्मात्सर्व विकल्प जाल मखिल सी जाय
पत्र चित् सी हा गने मानिक ॥ प्रहा पायन मा मि नियतं तव वाधि चिलात्मकी ॥ ॥ थन वा
ला विलि ॥ वरु वा ना हि मा क ॥ नृ ॥ नाग नाट ॥ तात्र रुति ॥ कवन नृ पला क खन क

व.पू
२९

मूलनक्षत्र॥ सकनक

सम्बन्ध

वक्र॥

मूल॥ वि० व

॥ वक्र॥

॥ अ

मूल॥ देवी

वक्र॥ क

मूल॥ सकल

वक्र॥ फल

ग.न
२९

मूल॥ लावा

॥ मूल॥ लाक॥ वृन्दा हे स्वर्गलोक विरहावनगन्तु तनचक्रवर्ति पाता
लेनागनाजाफुनिकलनमिर्त. सर्वगैर स्वाकृमाहे। हानेवृद्धमनिद्या. कनपनमविर्गुदहिनीवक्र
यागवर्दीकानपविद्यावक्रमम॥ शुनर्ह. सर्वलावननाकृ॥ ॥ वक्रवानाहिइलाक॥
निर्मानानिदिनक्षमधुलगता.

धनसययूजा॥ गीत॥ नागकामाडा॥ हँ विजसै हवखसमदहा॥ आ॥

च. ४
२२

चिच्छुनहि॥ गीत. नागवदशी॥ चक्रिकुसुला॥ ॥थनरिगचार्यपद॥ नर्यागीत॥ नागहेन
वी॥तान ॥नमामि२धीरुत्कवीना. च

॥लाकान

२२

मरुगलचक्रनाथाय. नमस्तुलानदायिन. नमस्तुद्वनूपाय. नमस्तुहवानक॥ ॥थनवलि
विय॥मधुलथिन. कितनमुति. अताकन. रुमापन. आशिर्वादा॥ विसर्जन. सगभननय. चितपू
जा. ररुसा. दगुसमयचुपकाय॥ ॥थनसरुहाऊन॥ दउचुय॥ प्रथमहागकाय. पूजा
॥वलिसकितन॥ नमस्तुगलच ॥ ॥क्रनाथायनमस्तुलानदायिन. नमस्तुद्वनूपाय. न
मस्तुहवानक. नमस्तुगुनमा ॥ ॥नमगलचक्रनाथायनमस्तुता॥ कितनसरुहाऊनचि
पनथिया॥ गीतवामदहिना॥ ॥थनमूलाचार्यनृगगीत॥ नागताहिगा कानायिनथि

च.पू

२३

स्तोत्रक॥ यस्मात्सर्वविकल्पकालमखिलीसंज्ञायुक्तसो गतीनि
संघर्षमलनीनसमाहितगुणं प्रत्यात्ममवतुलं सत्त्वार्थप्रतिहिन्ननूपनचिर्तं सस्मागनेमा
निकं प्रह्लापायनसामिनियतं तत्त्वाधिविक्लात्मकं ॥ ॥ थनमूलपूजायाय महर्निमित्तिया
थनमूलाचार्यमध्यसालि ॥ ॥ धनयासीनृत्वा ॥ मावासरुत ॥ नागजहृदि ॥ तात्रमा०

पुन

२३

राजआहनरक्ष.

स्तोत्रक॥ चतुर्लिकननि

च. पृ
२४

पूर्वशकिनीराक् ॥ कलचलझलिरझधन ॥ नृत्या ॥ नागप
चम ॥ तान ॥ ॥ ऊर्षवाचुनिरुन्

रलिक ॥ पाराशुयार्कविम्वसवरुदयगतासन्धितवि

गन्
२४

ध्वन्या. मूकासर्वा. सगामारुझनवीलाचक्रचिद्रक्तमाली ॥ घनमडामदितोगीपवनननसिना
सिन्हावामरुक्त. कर्किसर्वार्थरुक्तिमिरुजनसखदातावयिरुननया ॥ ॥ उरुन. लामा
वाह ॥ वनचनझलिरझधन ॥ ॥ नृत्या ॥ नागवसन्ता ॥ तानमप ॥ ॥ ऊर्षवलजननी
पला

रलिक ॥ श्रीमन्ति

च.पू
२५

द्विमहात्पायावमर्तप्रह्लादालिङ्गतामव्यापितमन्दिनिर्मितयनेभुलाकवीचकारुर्न
। मायाजालविलासनिरुतसर्वकीजानसंताविर्तनत्वामञ्जुवर्लकनामिजगतीतत्सुलानाध
नी ॥ पश्चिमखलुनाहाः कारुण्यवचनशालिआधन॥ नृत्य॥ नागनामकनि॥ गान ॥
हं हं दहधनः सैसात्रतनः

॥ अ॥ का॥ कालियाजलविजयचयचत्रतनका गम
मृगाधस्थितः ईसात्रिविविहातियस्यकनकाहासत्कपालावलि। तस्मैषाजहावानतावनगु २५

वैषत्याग्रजन्मावृद्धश्चामातासुवालीसदृशवदनामकिनताविग्रहः ॥ दक्षिणनूपिनी
॥ ॥ ललचनशालिआधन॥ नृत्य॥ नागनाट॥ गानकृति ॥ सकनजगतगुनसम्बन

॥ अ॥ का॥ श्रीहनुर्कमहावीरविशुद्धकलिआधनी
नोमिर्तवज्जवाताहिमहानागान्नागिनी ॥ अहिर्नकल्पतुसकल्पअपतिष्ठितमानसा

च.पू
२५

स्मर्यमानसिकार्नचनित्रानस्वनमस्तुत॥ ॥थनजिलझायगीतसर्ववृद्ध॥ ॥थनउपाध्म
नृत्य॥नागकामागु॥नात्रखरुक्ष॥अवनिनिहितज्ञाननीलस

॥आक॥हाहाहाहाअत्यरुहासअवनिनिहितज्ञान
नृसधरुक्षचखरुक्षदितनकनमूर्तिनर्तुनिदकिपाडा निविदितघनसत्रिनचमुकनर

गन
२३

मुचरुसमयगुरुवविद्यविद्यरुन्ताचलाःय॥ ॥विहाखन॥थनथकालिनमस्तुलधि
ल.हाथजापचान॥ ॥थनमूलाचार्यनृत्य॥माक॥नामहेनवी॥नात्र ॥इवदि
गम्वन.धवन

च.पू
२८

मलाय.सम्पक.हानाव.हासनी.कलायनम॥१॥सविशयागमनपादपक्षरूपनमात्मयागमन
नत्वपी०जसवाकगुकार्तेवमगुलज्वनेनमामिसिद्धात्त्वलवृद्धिवृद्धय॥३॥आ॥१॥स्वतावशुद्धा
सर्वधर्मास्वतावशुद्धा॥क.लुनक.ह्री.का.न.ल.प.द्वी.जि.ह्वा.प.म.र.ना.ग.रु.का.न.ल.व.रु.॥३॥आ॥जि
ह्वा.स.व.रु.नि.रु.द.॥सर्वसत्त्वधन
धने.द.रु.ह.रु.रु.आ.का.न.ल.स.य
अ॥१॥स्यु.स्यु.स्यु.स॥कमलावत॥१॥शीखाधियाना॥३॥यागमनीय॥३॥जिह्वासवरुलीय
॥३॥३॥सर्वविद्यानस्मान्॥पृथगाङ्गनअधियाना॥३॥शीखाहा॥पृथ॥३॥स्वाहा॥गन्ध॥३॥

ग.न
२

अ॥१॥स्वाहा॥धृ.पा॥३॥स्वाहा॥दी.प॥३॥शी.स्वा.हा॥ने.व.य॥३॥गुं.स्वा.हा॥ने.व.य॥३॥मन्त्राधिया
ना॥सं.म.खा॥रु.शी.ल॥रु.ह.च.रु॥यै.क.रु.ना.स.या॥१॥स्यु.क.लु॥स्यु.वा.रु.द्व.य॥स्यु.रु.द्व.य॥
स्यु.ना.तो॥३॥व.रु.का.य.हा॥३॥व
गी.म.न.रु.ह॥३॥आ.त्मा.ने.म.न.रु.ह॥३॥
शी.की.काल.माला.व.ले.वि.नि.द.रु.क.लाल.व.द.नी.शी.त.रु.वा.व.ले.वि.नी.वि.रु.सि.त.व.द.ना.ध.
म.व.द.ना.वि.न.वा.अ.रु.द.ल.गु.जा.उ.व.रु.ती.ती.प.ल.रु.म.रु.कि.ध.मा.अ.लि.ता.व.य.त॥रु.रु.ह॥
३॥ध.मा.अ.लि.प.प.व.न.स्का.ना.य.पा.या.यी.च.म.ने.पा.रु.म.रु.प.ति.रु.स्वा.हा॥३॥रु.ह.व.स॥

व.सू
२२

पृथ्व्याऽ॥ उं धृमाक्षनीयस्वाहा ॥ उं यागम्वनीयस्वाहा ॥ उं यागम्वनस्वाहा ॥ मध्य ॥ उं हृष्टपूर्क
सीयस्वाहा ॥ उं हृष्टामिनीयस्वाहा ॥ उं हृष्टचक्षुष्यस्वाहा ॥ पूर्व ॥ उं धानीयस्वाहा ॥ उं नृधिवी
यस्वाहा ॥ उं मात्सीयस्वाहा ॥ उत्तर ॥ उं उगीयस्वाहा ॥ उं कनतीयस्वाहा ॥
उं विहृत्सीयस्वाहा ॥ पश्चिम ॥ उं कापालीयस्वाहा ॥ उं वकीयस्वाहा ॥
उं कम्पीयस्वाहा ॥ दक्षिण ॥ उं वकीयस्वाहा ॥
उं हृष्टहृष्टहृष्टस्वाहा ॥ उं धिधुस्वाहा ॥ उं कनकनस्वाहा ॥ उं वर्कलिरस्वाहा ॥

ग.न
२२

उं यागम्वनहं ॥ उं यागम्वनीयहं ॥ मुनि ॥ नमस्तु यागधियसत्त्वमाचक नमस्तु सीमाना
स्तु वमाहृष्टदक नमस्तु सवीत्सकवकलावक नमस्तु
तत्त्वकनमाम्पहं सदा ॥ मनुपण्य ॥ एचु असाहि
धर्महि सक्तावमनवृत्तकनरचक्षुष्यकसहाव
स्वइश ॥ ॥ अथवा ॥ उं सं स्वाहा ॥ उं हं स्वाहा ॥ उं यं
स्वाहा ॥ उं हं स्वाहा ॥ उं हं स्वाहा ॥ उं ज स्वाहा ॥ उं स्मृ स्वा
हा ॥ उं स्मृ स्वाहा ॥ यं स्वाहा ॥ उं स्मृ स्वाहा ॥ उं स स्वाहा ॥ ॥ न ता कली कापनिशवरुदय

च.पू
३९

रत्नाक॥संपूर्णसर्व

थनजलननइराशन॥मडाकाताय.गीत॥सादशरायन॥थनसकनरूपश्चसालिका
य.सगवनकाय.कालीवृय॥ ॥सतिकृष्णभूतनसपूजायास्यनिष्काल्यगहन.सम

पृ
३९

च.पू
३९

पञ्चकविधिरथयायज्ञलाद्युर्ह॥ ॥रुतिपञ्चमगनचक्रपूजाविधिसमाप्त॥

पृ
३९

आशा मरुवाधि

३५३

ASHA ARCHIVES